चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-7-23	5	1-6

भास्कर खास • कपास की फसल में कीड़े मारने वाली दवाओं के छिड़काव के लिए डाइक्लोरो फेनॉक्सी एसिटिक का प्रयोग न करें

2-डी व 4-डी का प्रयोग कपास के लिए घातक, फूल गिरने से टिंडे नहीं बनते

• समस्या होने पर प्रभावित पौधों की कोंपलों को 15 सेंटीमीटर काट दें

यशपाल सिंह | हिसार

2-डी, 4-डी (डाइक्लोरो फेनॉक्सी एसिटिक) का प्रयोग कपास के लिए घातक है। इससे कपास की पत्तियों में बारीक कटाव हथेली जैसा आ जाता है, जिस कारण फूल गिर जाते हैं और टिंडे नहीं बनते। इसलिए ध्यान रखें कि जिस स्प्रेयर से 2, 4-डी प्रयोग में लाया गया हो उसे बीमारी व कीड़े मारने वाली दवाओं के छिड़काव के लिए प्रयोग में न लाएं। साथ ही 2, 4-डी का संपर्क कपास की फसल में प्रयोग में लाए जाने वाले कीटनाशकों और फफूंदनाशकों के साथ न हो। ये सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने किसानों को दी। कुलपति ने बताया कि 2, 4-डी से प्रभावित पौधों की समस्या हो जाने पर कोंपलों को 15 सेंमी काट दें व इसके बाद 2.5 प्रतिशत यूरिया तथा 0.5 प्रतिशत ज़िंक सल्फेट 21 के घोल का छिड़काव करें तथा 15 दिनों बाद ये प्रक्रिया दोबारा दोहराएं। खरपतवार नियंत्रण के लिए पहली गुड़ाई पहली सिंचाई से पहले कसौला से करें। हर सिंचाई के बाद समायोज्य कल्टीवेटर से निराई-गोड़ाई करें। आमतौर पर बिजाई के 40-45 दिन बाद सिंचाई करें।

किसान तेला और मिलीबग की रोकथाम के लिए ये उपाय करें

सूंडी से ग्रस्त कपास का पौधा।

कीट विशेषज्ञ डॉ. अनिल ने बताया हरा तेला की रोकथाम के लिए 40 मिली. कॉन्फीडोर या 40 ग्राम एकतारा या 250-350 मिली रोगोर 30 ईसी को 120 से 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़कें। पहला छिड़काव तब करें जब 20 प्रतिशत पूरे विकसित पत्ते किनारों से मुड़ने लगें या दो से अधिक शिशु तेले प्रति पत्ता हो। ज्यादा प्रकोप होने पर 60 ग्राम उलाला प्रति एकड़ का छिड़काव करें। यदि बालों वाली सूंडी, कुब्बड़ कीड़े, चित्तीदार सूंडी का भी आक्रमण जुलाई अंत से मध्य अगस्त तक हो तो 600 मिली क्विनलफॉस एकालक्स 25 ईसी. या 75 मिली. स्पाईनोसैड ट्रैसर 75 एस सी का प्रयोग करें।

टिंडा गलन से बचाव के लिए करें स्ट्रेप्टोसाइक्लिन का छिड़काव

पादप रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिल कुमार सैनी ने बताया कि टिंडा गलन से बचाव के लिए जुलाई में 6-8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व कापर आक्सीक्लोराइड 600-800 ग्राम प्रति एकड़ को 150-200 लीटर पानी में मिलाकर 15-20 दिन के अंतर पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

नाइट्रोजन-फॉस्फोरस का करें प्रयोग

डॉ. करमल मलिक ने बताया कि नरमा में नाइट्रोजन 35 किग्रा, फास्फोरस 12 किग्रा, देसी कपास में नाइट्रोजन 20 किग्रा व संकर कपास में नाइट्रोजन 70 किग्रा, फास्फोरस 24 किग्रा व पोटाश 24 किग्रा प्रति एकड़ की सिफारिश है। संकर किस्मों में नाइट्रोजन की 1/3 मात्रा बौकी आने पर एवम 1/3 मात्रा फूल आने पर डालनी चाहिए। बेहतर होगा कि सारा फास्फोरस, पोटाश व 10 किग्रा ज़िंक सल्फेट बिजाई के समय डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	13.7.23	5	1-3

मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है : प्रो. काम्बोज

- **हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन**

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चिता के साथ-साथ वायु प्रदूषण से भी निजात मिलेगी।

उन्होंने बताया कि खासकर भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते है तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा मे ज्यादातर किसान केवल सर्दी के मौसम में सफेद बटन खुम्ब की काश्त करते है किन्तु इसके इलावा दूसरी मशरूम जैसे ढींगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन भी लिया जा सकता है किन्तु लोगों में अज्ञानता की वजह से लोग दूसरी खुम्बों का सेवन नहीं करते और खुम्ब उत्पादकों द्वारा इन खुम्बों की बिक्री में दिक्कत महसूस होती है।

इसके अलावा किसानों को मशरूम टेक्नोलॉजी प्रयोगशाला का भी भ्रमण करवाया गया। इसके अलावा डॉ जगदीप सिंह, डॉ. डी के शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ भूपेन्द्र सिंह, डॉ. पवित्रा पुनिया ने संबंधित विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13.7.23	4	8

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण सम्पन्न

हिसार, 12 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चितता के साथ-साथ वायु प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। उन्होंने बताया कि खासकर भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते है। डॉ जगदीप सिंह, डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज ने संबंधित विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13.7.23	12	1-3

भास्कर खास • एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण में बोले वीसी

कम लागत में कर सकते हैं मशरूम का व्यवसाय

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक और रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चिता के साथ-साथ वायु प्रदूषण से निजात मिलेगी। उन्होंने बताया कि खासकर भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते हैं। सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम आदि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है।

विवि के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है। संस्थान के सह निदेशक प्रशिक्षण डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि हाल में हरियाणा में 21,500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ। जिसमें लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के अलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गांवों में भी इसकी मांग बनी रहती है।

इस प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा मे ज्यादातर किसान केवल सर्दी के मौसम में सफेद बटन खुम्ब की काश्त करते हैं किन्तु इसके अलावा दूसरी मशरूम जैसे ढींगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन लिया जा सकता है। लोग दूसरी खुम्बों का सेवन नहीं करते और खुम्ब उत्पादकों द्वारा इन खुम्बों की बिक्री में दिक्कत महसूस होती है। डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ. भूपेन्द्र सिंह और डॉ. पवित्रा पुनिया ने संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13.7.23	2	4-8

खेतीबाड़ी

एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन, कुलपति प्रो. कांबोज ने दी जानकारी

कम से कम लागत में शुरू कर सकते हैं मशरूम का उत्पादन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. कांबोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलबान सिंह मंडल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है।

एचएयू मे मशरूम उत्पादन पर आयोजित कार्यक्रम में जानकारी देते प्रशिक्षक। *संवाद*

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रांत में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमे लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गावों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसको बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है।

इस प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि ज्यादातर किसान केवल सर्दी के मौसम में सफेद बटन खुम्ब की काश्त करते हैं, इसके इलावा दूसरी मशरूम जैसे ढींगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन भी लिया जा सकता है। किसानों को मशरूम टेक्नालॉजी प्रयोगशाला का भी भ्रमण करवाया गया। इस दौरान डॉ. जगदीप सिंह, डॉ. डीके शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. पवित्रा पूनिया ने भी व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	12.07.2023	--	--

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रान्त में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमे लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गावों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसको बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है। इसके अलावा डॉ जगदीप सिंह, डॉ. डी के शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ भूपेन्द्र सिंह, डॉ. पवित्रा पुनिया ने संबंधित विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	12.07.2023	--	--

मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हकृवि में मशरूम उत्पादन तकनीक पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का समापन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान में मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन किया गया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा प्रांत के विभिन्न जिलों जैसे हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, अंबाला, जींद, भिवानी, करनाल, पानीपत, रोहतक, रेवाड़ी से प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कम से कम लागत में शुरू किया जा सकता है। मशरूम उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का इस्तेमाल किया जाता है जिससे खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चिता के साथ-साथ वायु प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। उन्होंने बताया कि खासकर भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित युवक व युवतियां इसे स्वरोजगार के रूप में अपना सकते है तथा सारा वर्ष भी मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जिनमें सफ़ेद बटन मशरूम, ओयस्टर या ढींगरी, मिल्की या दूधिया मशरूम, धान के पुवाल की मशरूम इत्यादि उगाकर सारा साल मौसम के हिसाब से इसका उत्पादन किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा भी किसानों तथा बेरोजगार युवाओं को इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मण्डल ने बताया कि सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी कई तरह की मशरूम की प्रजातियों को भी बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रहा है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि अभी हाल ही में हरियाणा प्रान्त में 21500 मैट्रिक टन मशरूम का उत्पादन हुआ, जिसमे लगभग 99 प्रतिशत से ज्यादा उत्पादन सफेद बटन मशरूम का ही है। दिल्ली, लुधियाना, चंडीगढ़ के इलावा कई अन्य छोटे बड़े शहरों के साथ साथ गावों में भी इसकी मांग बनी रहती है और इसको बेचने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होती है।इस प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा मे ज्यादातर किसान केवल सर्दी के मौसम में सफेद बटन खुम्ब की काश्त करते है किन्तु इसके इलावा दूसरी मशरूम जैसे ढींगरी व दूधिया मशरूम का उत्पादन भी लिया जा सकता है किन्तु लोगों में अज्ञानता की वजह से लोग दूसरी खुम्बों का सेवन नहीं करते और खुम्ब उत्पादकों द्वारा इन खुम्बों की बिक्री में दिक्कत महसूस होती है। इसके अलावा किसानों को मशरूम टेक्नोलॉजी प्रयोगशाला का भी भ्रमण करवाया गया। इसके अलावा डॉ जगदीप सिंह, डॉ. डी के शर्मा, डॉ. राकेश कुमार चुघ, डॉ. विकास कम्बोज, डॉ. अमोघवर्षा, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. संदीप भाकर, डॉ. सरोज यादव, डॉ भूपेन्द्र सिंह, डॉ. पवित्रा पुनिया ने संबंधित विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13.7.23		

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के समीप पौधारोपण करते लैंडस्केप इकाई के नियंत्रक अधिकारी डा. पवन कुमार, सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान के सह-निदेशक प्रशिक्षण एवं होंटा के अध्यक्ष डा. अशोक गोदारा, सह-निदेशक (विस्तार) डा. कृष्ण यादव, डा. संदीप आर्य, दीपक भंडारी सहित अन्य कर्मचारी। • जागरण।